बाइबल टीचर

वर्ष 16 अगस्त 2019 अंक 9

सम्पादकीय

स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें

प्रेरित पौलुस के शब्द आज कई स्त्रियों को बड़े कड़वे लगते हैं। परन्तु परमेश्वर के वचन में जो आज्ञा हमें दी गई है हमें उसे वैसे ही मानना चाहिए। आज हमारे संसार में इस बात को बड़े ही हल्के-फुलके ढंग से लिया जाता है। परमेश्वर ने अपने बचन में जिन बातों की आज्ञा दी है, उनका कुछ अर्थ है।

हमारा प्रश्न आज यह है कि कलीसिया में जहां पुरुष भी उपस्थित हैं क्या स्त्रियां अगुवाई कर सकती है? परमेश्वर का वचन बताता है कि कुरिन्थ की कलीसिया में कई गलतियां हो रही थीं और यह इसलिये हो रहा था कि कुछ सदस्य अपनी सीमा को लांघ रहे थे। बहुत से सदस्यों को कई बातें समझ में नहीं आ रही थी तथा लोग अपनी मनमानी कर रहे थे। पौलूस को वहां कहना पड़ा कि ''परमेश्वर गडबड़ी का परमेश्वर नहीं है।'' (1 कुरि. 14:33)।

कुछ समस्याएं हैं जो वहां धीरे-धीरे उत्पन्न हो रही थीं। जैसे कि कलीसिया में विभाजन हो रहा था (1:10-7)। नैतिक समस्याएं जैसे कि व्यभीचार तथा कलीसिया का अनुशासन (5:1-13), यौन अनैतिकता जैसी समस्याएं हो रही थी, विवाहित जीवन का अर्थ क्या है, विवाहित और अविवाहित जीवन का अर्थ क्या है, विवाहितों और अविविहाहितों को परामर्श दिया जा रहा था, पुनः विवाह करने के निर्देश दिये गए थे (7:10-40)। मूर्तो के सामने बलिदान किया हुआ भोजन (8:1-13); कलीसिया में स्त्रियों का सिर ढांकना तथा अपने पति के आधीन रहना। (11:2-16) प्रभु भोज में कैसा व्यवहार होना चाहिए (11:17-34) आत्मिक वरदान (12:1-14;40) और फिर हम देखते हैं कि कलीसिया में स्त्रियों का व्यवहार कैसा होना चाहिए। (14:33-35)।

आज कई कलीसियाओं में स्त्रियां सरे आम अगुवाई करती हैं जो कि परमेश्वर के वचन के विरोध में है। कई स्त्रियां अपने को पास्टर कहती है, और यह बड़े ही दुख की बात हे कि ऐसे लोगों को परमेश्वर का कतई भय नहीं है। ऐसी स्त्रियां यह नहीं जानती कि पास्टर केवल बुजुर्ग पुरूष होते हैं। कलीसिया में स्त्रियों को चुप रहने को कहा गया है, परन्तु कुरिन्थ की कलीसिया में यह समस्या साफ़ दिखाई दे रही थी। पौलुस ने जब देखा कि अराधना में अनुशासन का उल्लंघन हो रहा है तब उसे

यह कहना पड़ा कि स्त्रियां कलीसिया या मण्डली में चुप रहें। पौलुस कहता है ''क्योंकि उन्हें बोलने की आज्ञा नहीं।''

पौलुस यह सिखाने की कोशिश कर रहा है कि चाहे हमें यह बुरा लगे, परन्तु परमेश्वर के वचन से बढ़कर और कोई चीज नहीं है। आगे वह कहता है कि ''स्त्रियों को आधीन रहने की आवश्यकता है और यदि कुछ बोलना है या सीखना है तो घर में पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बात करना लज्जा की बात है।'' (1 कुरि. 14:34-35)। इस बात को सपोर्ट करते हुए पौलुस एक कारण देता है, वह कहता है, ''और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करें और न पुरुष पर आज्ञा चलाएं, परन्तु चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहिले और उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया पर स्त्री बहकाने में अपराधिनी हुई।'' (1 तीमु. 2:11-14)। कई स्त्रियां जो प्रचार करती है उन्हें बाइबल के यह पद पसंद नहीं है। परन्तु जहां स्त्रियों की सभा हो और पुरुष वहां उपस्थित न हो, तो वहां स्त्री सिखा सकती है। आज बहुत सारी स्त्रियां हैं जो बहुत अच्छी तरह से सिखा सकती हैं परन्तु परमेश्वर की आज्ञा तोड़े बिना यदि वे केवल स्त्रियों की सभा में सिखाये तो बहुत अच्छी बात है। जो कलीसिया के अगुवे स्त्रियों को अगुवाई करने का कार्य देते हैं जहां पुरुष भी है तो वे परमेश्वर के वचन में जोड़ रहे है। (प्रकाशित 22:18-19)। यदि स्त्रियां उस आधीनता को नहीं सीख रही हैं जो परमेश्वर चाहता है (11:2-16), तो पौलुस को 34 पद में कहना पड़ा कि ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहे'' हम यह भी देखते हैं कि वह कहता है कि यदि उनके पास कोई सवाल है तो वे घर पर जाकर पूछे, क्योंकि उनका कलीसिया में बात करना लज्जा की बात है। (1 कुरि. 14:35)। यदि कोई स्त्री कलीसिया में बात करती है तो वह परमेश्वर द्वारा दी गई अधीनता को नजर अन्दाज कर रही है। जो लोग इन बातों के बारे में वाद विवाद करते हैं उनके विषय में प्रेरित कहता है, ''क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला''? या केवल तुम ही तक पहुंचा है? यदि कोई अपने आपको भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे तो यह जान लें कि जो बात मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं है। परन्तु यदि कोई न जाने तो न जाने। (1 कुरि. 14:36-38)। यदि हमारी अराधना परमेश्वर के वचन अनुसार नहीं है, तो परमेश्वर ऐसी अराधना को स्वीकार नहीं करेगा। वचन कहता है कि स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें। क्या हम परमेश्वर की इस आज्ञा का पालन करते हैं?

मसीहीयत में स्त्रियों का बड़ा आदर और सम्मान है। बाइबल कहती है, ''वैसे ही हे पतियों तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पत्र जानकर उसका आदर करो।'' (1 पतरस 3:7)। एक मसीही अपनी पत्नी के महत्व को समझता और पत्नी उसके आधीन रहती है। परमेश्वर ने स्त्री को एक रोल दिया है और उसे इस कार्य को पूरी आधीनता के साथ अदा करना है। परमेश्वर के आधीन होना या अपने पति के अधीन होना कोई छोटी बात नहीं है। हम अपने माता पिता के आधीन रहकर उनकी आज्ञा को मानते हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारा महत्व कम हो गया है। इसी प्रकार से स्कूल में हम अध्यापकों के आधीन रहते है। हम उनका आदर करते हैं। हम छोटे नहीं बन जाते।

एक स्त्री को चर्च में अपना रोल या कार्य समझना चाहिए। बाइबल कहती है, ''कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।'' (1 कुरि. 11:3)। सिर का अर्थ है, जिसके आधीन होकर हम कार्य करते हैं, बच्चों के हैड माता-पिता होते है। पौलुस यह बताने का प्रयत्न कर रहा है कि स्त्री पुरुष की हैड नहीं है। इफिसियों 5:22 में पौलुस कहता है, ''पत्नियों अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के क्योंकि पति पत्नी का सिर हैं । कई परिवारों में स्त्री हैड होती है, और वह पुरुष को कुछ नहीं समझती परन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता। परमेश्वर के वचन में साफ लिखा है, ''और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।'' (1 तीमु. 2:12)। परमेश्वर की कलीसिया में अगुवाई केवल पुरुषों के हाथ में होती है, क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है। आपको शायद यह बात अच्छी न लगे, परन्तु परमेश्वर जो कहता है, उसका अर्थ वही होता है। बाइबल यह नहीं कहती कि स्त्रियां सिखा नहीं सकती, वे सिखा सकती है परन्तु वहां पर जहां पुरुष उपस्थित न हो। प्रार्थना करने के लिये जहां पुरुष भी है वह प्रार्थना नहीं करती क्योंकि लिखा है, ''सो मैं चाहता हूं कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करे।'' (1 तीमु. 2:8) मसीह की कलीसिया की सभाओं में केवल पुरुष ही प्रार्थना में अगुवाई करते हैं।

हम शायद इन बातों को न समझ पायें परन्तु यह परमेश्वर की आज्ञा है और हमें इसे मानना चाहिए। याद रखिये कलीसिया की सभाओं में जहां पुरुष भी उपस्थित है, केवल पुरुष लोग अगुवाई करते हैं। स्त्री एल्डर या पास्टर नहीं हो सकती क्योंकि यह भी केवल पुरुष लोग होते हैं। वचन में लिखा है कि ऐल्डर या पास्टर को एक ही पत्नी का पति होना चाहिए। (1 तीमु. 3:2; तीतुस 1:6)। कई स्थानों पर सम्प्रदायिक कलीसियाओं में परमेश्वर के इस नियम को बड़े ही असानी से तोड़ दिया जाता है। कुछ लोग तो इसके विषय में बात ही नहीं करना चाहते, परन्तु न्याय के दिन हमें इसका जवाब देना पड़ेगा। मनुष्य शायद आपको आदर देकर कहें कि ''आप पास्टर अनीता हो'' परन्तु परमेश्वर इसे मान्यता नहीं देता। एक मसीही स्त्री जिसका पति ऐल्डर है, अपने पति का आदर करती है तथा परिवार में उसकी बहुत सारी जिम्मेवारियां हैं। कलीसियां के कार्यों में वह अपने पति की सहायक है।

अक्विला और प्रिसकिल्ला ने व्यक्तिगत रूप से वचन को सिखाया। (प्रेरितों 18:26)। एक पत्नी अपने पति को व्यक्तिगत रूप से सिखा सकती है। (1 पतरस 3:1-2)। एक स्त्री दूसरी स्त्रियों को सिखा सकती है। बच्चों की क्लास लेकर बाइबल सिखा सकती है। (तीतुस 2:4-5)। बूढ़ी स्त्रियां जवान स्त्रियों को सिखा सकती है। (तीतुस 2)।

एक स्त्री का परिवार में और कलीसिया में बहुत महत्व है। पुरुष को स्त्री का सम्मान करना चाहिए। तथा स्त्री को यह समझना चाहिए कि वह पति के अधीन है तथा कलीसिया में उसे चुप रहने की आज्ञा दी गई है। बाइबल सभाओं में जहां पुरुष भी है आपको यह समझना है कि अगुवाई का कार्य केवल पुरुषों का है।

आप किस ओर हैं?

सनी डेविड

मित्रो, मैं सचमुच में परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि उसने मुझे यह सुअवसर प्रदान किया है कि मैं नम्रता और पूरी खराई के साथ उसका वचन आप तक पहुंचाऊं। मेरी आशा है कि उन सब बातों पर बड़ी ही गंभीरता से विचार करेंगे जिन्हें मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं।

सैकड़ों वर्ष पूर्व, इस्राएली लोग जब मूसा की अगुवाई में, परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए देश की ओर बढ़ रहे थे, तो मार्ग में परमेश्वर ने मूसा को एक जगह एकान्त में बुलाकर, उसके द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को अपनी वाचा के रूप में दिया ताकि सारे इस्राएली लोग परमेश्वर की उस लिखी हुई वाचा के अनुसार चलें। उस वाचा के अनेकों नियमों व आज्ञाओं में यह आज्ञा भी सम्मिलित थी, कि परमेश्वर के लोग अपने लिये कोई मूर्त्ती खोदकर न बनाएं, न किसी वस्तु की प्रतिमा बनाएं, और सच्चे वा जीवते परमेश्वर को छोड़कर, न तो किसी मूर्ती इत्यादि के सामने झुके न उनकी उपासना करें। (निर्गमन 20:4,5)। परन्तु हम पढ़ते हैं कि जब मूसा परमेश्वर की आज्ञाओं की वाचा को लिये हुए उन लोगों के निकट पहुंचा, तो उसे यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कि उन लोगों ने खोदकर अपने लिये एक प्रतिमा बना ली थी और वे उस मूर्ति की पूजा कर रहे थे, उसे दण्डवत कर रहे थे, और उसकी उपासना कर रहे थे। उन लोगों की ढिठाई के कारण मूसा ने उन्हें ललकार कर कहा, कि तुम में से जो कोई यहोबा परमेश्वर की ओर का हो वह मेरे पास आए। (निर्गमन 32:26)।

सैकड़ों वर्ष पहिले, लोगों के सामने रखा गया यह प्रश्न आज भी लोगों के लिये एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। आज बहुतेरे लोग परमेश्वर और शैतान दोनों की सेवा एक साथ मिलकर करना चाहते है। वे एक ओर तो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं और दूसरी और शैतान को भी प्रसन्न करना चाहते है। एक ओर तो शायद वे अपना कुछ समय, या धन या योग्यता परमेश्वर को दे रहे हों, परन्तु दूसरी ओर, वे अपना बाकी का समय, धन और योग्यता इत्यादि को शैतान को प्रसन्न करने में लगा रहे हैं। परन्तु यह असम्भव है, क्योंकि हम परमेश्वर और शैतान दोनों को एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते। प्रभु यीशु ने कहा, ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता....''तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।'' (मत्ती 6:24)।

किन्तु, जिस प्रश्न पर हम विचार कर रहे हैं, उसके सदा ही दो पहलू रहे हैं। जैसे कि, उदाहरण के रूप से, भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के दिनों में, हम पढ़ते हैं, कि बहुतेरे लोग बाल नाम के एक देवता की उपासना करते थे। सो एलिय्याह ने उन लोगों के पास आकर कहा, कि तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? सो आओ आज परखकर देख लें, और यदि यहोवा परमेश्वर हो तो उसके पीछे हो लो और यदि बाल

सच्चा परमेश्वर ठहरे तो उसके पीछे हो लो। (1 राजा 18:21)। ये लोग परमेश्वर की भी उपासना करना चाहते थे और बाल देवता की भी। परन्तु न तो परमेश्वर बाल था और न बाल परमेश्वर था, क्योंकि परमेश्वर सच्चा वा जीवता है, और बाल लोगों का केवल एक मनगढ़त देवता था। सो एलिय्याह ने उनसे कहा, कि तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, या तो पूरी तरह से परमेश्वर की ओर हो लो या फिर बाल देवता की ओर। अकसर मेरे पास कुछ लोगों के पत्र आते हैं, वे कहते हैं कि हम इस भगवान को या उस भगवान को मानते हैं, और साथ ही हम प्रभु यीशु मसीह को भी मानते हैं। परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह बात बिल्कुल असंभव है। आप एक ही समय में यीशु मसीह को और किसी को अपना उद्धारकर्त्ता नहीं बना सकते। वास्तव में, यीशु ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)। सो या तो हम पूरी तरह से प्रभु यीशु की ओर है या हम उसके विरोध में है। उस ने कहा, ''जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है।'' (मत्ती 12: 30)।

उसने यह भी कहा, कि वे लोग जो संसार के चौड़े व खुले मार्ग पर चल रहे हैं उनका अंत अनन्त विनाश होगा, परन्तु वे जो परमेश्वर के सकरे वा कठिन मार्ग पर चल रहे हैं वे अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 7:13, 14)। परन्तु तौभी, आज बहुतेरे लोग अपनी मन-मानी से संसार के चौड़े मार्ग पर चलकर अनन्त जीवन में प्रवेश पाना चाहते हैं। किन्तु यह असंभव है। क्योंकि प्रभु ने कहा, कि संसार का चौड़ा मार्ग अनन्त विनाश को पहुंचाता है, और परमेश्वर का सकरा मार्ग अनन्त जीवन को पहुंचाता है। इसलिये, चौड़े मार्ग पर चलकर यदि कोई सकरे मार्ग की मंजिल पर पहुंचने की इच्छा करता है, तो वह पूरब की ओर जाते हुए पश्चिम में पहुंचने का स्वप्न देख रहा है। परन्तु आप जानते हैं कि यह बिल्कुल असंभव है। और यह बात भी बिल्कुल असंभव है, कि दोनों मार्गो पर एक साथ चलकर मनुष्य अनन्त जीवन प्राप्त कर ले। क्योंकि ये दोनों मार्ग एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। इसलिये, या तो हम पूरी तरह से सकरे मार्ग पर चल सकते हैं और या फिर चौड़े मार्ग पर।

ठीक यही सिद्धांत परमेश्वर के प्रति हमारी भक्ति वा उपासना के बारे में काम में लाया जा सकता है। अर्थात, या तो हमारी उपासना सच्ची है और या फिर वह व्यर्थ है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि अवश्य है कि परमेश्वर के लोग उसकी उपासना आत्मा और सच्चाई से करें। (यूहन्ना 4:24)। और आत्मा और सच्चाई से हम परमेश्वर की उपासना केवल तभी कर सकते हैं, जबकि हम उसकी उपासना केवल उसके वचन के अनुसार करें, क्योंकि उसका वचन ही सत्य है। (यूहन्ना 17:17)। बहुतेरे लोग परमेश्वर की उपासना तो करते हैं, परन्तु उनकी उपासना बिल्कुल व्यर्थ होती है, क्योंकि वह सच्चाई से, अर्थात उसके वचन के अनुसार नहीं होती, परन्तु वह मनुष्यों की बनाई हुई विधियों, रीति या रिवाजों के अनुसार होती है। इसीलिये, प्रभु ने कहा, ''ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं'' (मत्ती 15:9)। आज अधिकांश लोग जो अपने आप

को मसीही कहते हैं, उनकी उपासना वास्तव में व्यर्थ है, क्योंकि वे परमेश्वर की उपासना मनुष्यों की बनाई हुई विधियों के द्वारा कर रहे हैं। वे ऐसे-ऐसे दिनों वा त्योहारों को मानते हैं जिनका परमेश्वर के वचन में नाम तक भी नहीं मिलता, वे उसकी उपासना ऐसी-ऐसी विधियों के द्वारा करते हैं जिनकी शिक्षा परमेश्वर का वचन बिल्कुल नहीं देता, परन्तु वे मनुष्यों के बनाए हुए धर्मोपदेश हैं। परन्तु यदि हम परमेश्वर की ओर है तो हम उसकी उपासना केवल उसके वचन में दिये हुए नियमों के अनुसार ही करेंगे। किन्तु, हम परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई से नहीं कर सकते यदि हम मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके मानते और सिखाते हैं।

सो आप किसी की ओर है? यदि आप परमेश्वर की ओर हैं, तो आप अवश्य ही इस बात को स्वीकार करेंगे कि केवल परमेश्वर का मार्ग ही सच्चा है। (यशायाह 55:7-9)। यदि आप परमेश्वर की ओर है, तो आप अपने मन में इस बात का अनुभव करेंगे कि प्रत्येक मनुष्य अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से अलग और दूर है। (यशायाह 59:1, 2)। यदि आप परमेश्वर की ओर हैं, तो आप मानेंगे, कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य -कर्म है। (प्रेरितों 5:29; 1 यूहन्ना 2:3, 4)। और, यदि आप परमेश्वर की ओर है, तो आप इस बात का निश्चय करेंगे, कि आप सदा परमेश्वर के प्रति विश्वासीं और वफादार बने रहेंगे। (प्रकाशित 2:10; लूका 9:62)।

परन्तु, वे जो परमेश्वर की ओर नहीं होना चाहते, उनके पास इस जीवन के बाद कोई आशा न रहेगी। वे उस मार्ग पर चल रहे हैं, जिसका अन्त बड़ा ही भयानक है। पवित्र बाइबल कहती है, कि उनके लिये केवल दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। (इब्रानियों 10:27)। क्योंकि वे परमेश्वर की ओर नहीं है और उसके पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते, इसलिये वे प्रभु के उस महाना दिन के आने पर, जिसमें वह सब मनुष्यों का न्याय करेगा, "प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

परन्तु, क्या आप प्रभु की ओर हैं? वह आप से प्रेम करता है। उसने आपकी मुक्ति के लिये अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। वह आपके विषय में धीरजवन्त है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नाश हो, परन्तु उसकी इच्छा है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (2 पतरस 3:9)। वह चाहता है कि आप उसमें विश्वास करें, और अपने पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप विश्वास और आज्ञापालन के साथ प्रभु के पास आएंगे, तो आपको अंधकार के वश से छुड़ाकर ज्योति के राज्य में प्रवेश कराएगा, जहां छुटकारा, अर्थात, पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (कुलुस्सियों 1:13)। आज आपके सामने एक बहुत बड़ा निश्चय है, अर्थात क्या आप संसार के अंधकार में रहना चाहते हैं या परमेश्वर की ज्योति में प्रवेश करना चाहते हैं? जिस तरफ होने का निश्चय आज आप करेंगे वही आपकी आत्मा का अनन्त निवास होगा।

परमेश्वर के लोगों को विश्वास योग्य होना चाहिए

जे. सी. चोट

अपने पिछले पाठों में हमने देखा कि किस प्रकार से एक मसीही बना जाता है तथा एक मसीही बनने के पश्चात हमें कैसा जीवन व्यतित करना चाहिए? मसीही बनने के बाद एक व्यक्ति को ऐसा समझना चाहिए कि वह प्रभु की शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन बितायेगा। किसी ने कहा है यदि कोई विश्वास योग्य है, तो उसमें इसके लक्षण, दिखाई देते है। यानि आप समझ सकते हैं कि वह प्रभु की शिक्षा अनुसार चल रहा है। तथा हम यह भी समझ सकते हैं कि वह कोई गलत काम नहीं करेगा। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो प्रभु का कार्य करते-करते इतने मजबूत होते जाते हैं कि वे प्रभु के कार्य को सोच-समझकर करते हैं। वे जैसा बोलते हैं वैसा करते भी हैं। सच्चे मसीही प्रत्येक प्रत्येक बात में पहिला स्थान मसीह और उसकी कलीसिया को देते हैं। (मत्ती 6:33)। यदि वे शादीशुदा है तो अपने अच्छे जीवन को एक आदर्श पति-पत्नि की तरह दिखाते हैं। अर्थात वे एक दूसरे के प्रति विश्वास योग्य हैं।

इसी तरह से हम देखते हैं कि परमेश्वर विश्वास योग्य है तथा यीशु के विषय में भी यही कहा जाता है। प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''परमेश्वर सच्चा है; जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया हैं (1 कुरि. 1:9)। फिर पौलुस कहता है, ''तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको)।'' (1 कुरि. 10:13)। इब्रानियों का लेखक कहता है, ''और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।'' (इब्रा. 10:23)। पतरस कहता है, ''इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा अनुसार दुख उठाते है, वे भलाई करते हुए, अपने प्राण को विश्वास योग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें। (1 पतरस 4:19)। यदि हम अपने पापों को मान लें तो परमेश्वर हमें क्षमा करने में विश्वास योग्य है। (1 यूहन्ना 1:9) परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता परन्तु चाहता है कि कोई नाश न हो, और हर एक को मन फिराव का अवसर देता है। (2 पतरस 3:9)। उसने वायदा किया है कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा और न भूलेगा। (इब्रानियों 13:5)।

जब हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं, तथा यह विश्वास करते हैं कि यीशु उद्धार करता है। और जब हम बपतिस्मा ले लेते है तब वह हमें अपनी कलीसिया में मिला देता है। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 2:47) जब हम उसकी आज्ञा को मान लेते हैं तब हम अपने जीवन को उसकी सेवा में समर्पित कर देते हैं।

और यह निर्णय लेते हैं कि जीवन भर उसकी सेवा करेगे। पौलुस मसीहीयों से कहता है, ''इसलिये हे भाईयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।'' (रोमियों 12:1-2)। फिर आगे 9-23 पदों में पौलूस ने मसीहीयों को मिलकर रहने की सलाह दी और यह तरीका बताया था कि कैसे और किस प्रकार से आपस में व्यवहार करें, यहां लिखा है, ''प्रेम निष्कपट हो, बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो, भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो आत्मिक उन्माद में भरे रहो, कलेश में स्थिर रहो, प्रार्थना में नित्य लगे रहो। पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उसमें उनकी सहायता करो, पहुनाई करने में लगे रहो; अपने सताने वालो को आशिष दो, श्राप न दो। आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करो, और रोने वालों के साथ रोओ। आपस में एक सा मन रखो, अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। बुराई के बदले बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिंता किया करो। जहां तक हो सके तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो, अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला, क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो। परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।'' विश्वास योग्य लोग वे हैं जो उसकी आज्ञाओं को मानते है। वचन कहता है, ''जो मुर्दे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य है'' (प्रकाशित 14:13) आगे वह कहता है, ''धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।'' (प्रकाशित 22:14) प्राण देने तक विश्वासों रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा। (प्रकाशित 2:10)।

मसीह की कलीसिया के लोग मसीह की दुल्हिन है। यीशु मसीह कलीसिया का दुल्हा है। हमारा प्रभु कलीसिया के प्रति हमेशा विश्वास योग्य है। परन्तु क्या कलीसिया उसके प्रति विश्वास योग्य है? इफिसियों के 5 अध्याय में लिखा है कि विवाह में पति-पत्नी का संबंध कैसा होना चाहिए और यही बात कलीसिया पर भी लागू होती है। पौलूस कहता है कलीसिया का सिर मसीह है तथा पत्नी का सिर पति है। यीशु ने अपनी कलीसिया के लिये अपने आपको दे दिया। (इफि. 5:23-30) रोम में मसीहीयों को लिखते हुए पौलूस कहता है, सो हे मेरे भाइयो तुम भी मसीह की देह द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ जो मरे हुओं में से जी उठा ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं। (रोमियों 7:4)। पौलुस

यहां यह बता रहा है कि आप मसीही बनने के बाद अर्थात मसीह के साथ विवाह होने पर व्यवस्था के आधीन नहीं है। आत्मिक रूप रूप से मसीह के साथ विवाहित होने पर हमे उसके प्रति विश्वास योग्य रहना है। यीशु ने कहा था, ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।'' (मत्ती 22:37)। एक मसीही होते हुए हमें मसीही की शिक्षा, अराधना तथा अपने जीवन को अच्छा रखने में विश्वास योग्य बनाकर रहना है।

''एक मसीही जीवन शैली''

बिल जॉनसन

प्रतिदिन एक मसीही को कैसा जीवन व्यतीत करना है, इसके विषय में बाइबल की शिक्षा को देखेंगे:

''प्रेम''

बाइबल यह शिक्षा देती है परमेश्वर की संतान होने के नाते केवल प्रेम को ही हमें जीवन में प्रोत्साहित करना चाहिए।

''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।'' (2 कुरिन्थियों 5:7)

''यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं और प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झंझनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूं और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं परन्तु प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं'' (1 कुरिन्थियों 13:1-3)

''और मसीह यीशु में न खतना न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।'' (गलतियों 5:6)

इन पदों से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हमारा जीवन सदा विश्वास से प्रभावित होकर प्रभु के द्वारा कार्य करता है।

पवित्र आत्मा की सहायता से, हम मसीह यीशु द्वारा दिए गए आज्ञाओं को जो नये नियम के लिखने वाले लेखकों को दी गई मानते हैं। यह केवल हमारे प्रेम के कारण है जो हम मसीह यीशु से करते हैं।

''यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।'' (यूहन्ना 14:15)

''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक हैं ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' (2 तिमुथियुस 3:16, 17)

''आराधना''

बाइबल यह शिक्षा देती है अब क्योंकि मैं परमेश्वर की संतान हूं इसलिये मुझे उसकी आराधना करनी चाहिए।

''परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढता है।

''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी अराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करे।'' (यूहन्ना 4:23, 24)

प्रेम के द्वारा जो हमारा विश्वास से चलना है उसमें कई मुख्य चीजें हैं जो आराधना के साथ बखूबी जुड़ी है।

परमेश्वर की संतान होने के नाते बाइबल हमें शिक्षा देती है कि हफ्ते के पहले दिन हम आराधना आत्मा और सच्चाई से करें।

''सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।'' (प्रेरितों 20:7)

''अब उस चंदे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसे ही तुम भी करो।'' सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।'' (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)

परमेश्वर के वचन से हम यह जानकारी प्राप्त करते हैं कि अब हमें एक दूसरे के साथ इकट्ठे होना चाहिए क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और हमारी यह इच्छा है कि हम उसके वचन की आज्ञाओं को मानें (1 कुरिन्थियों 13:1-3)

''और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिंता किया करें और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़े, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहे, और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक किया करो।'' (इब्रानियों 10:24, 25), (यूहन्ना 4:23, 24)

जब हमारा प्रेम, परमेश्वर के प्रति इकट्ठे होकर उसके वचन को अध्ययन करने के लिये, प्रकट होता है।

''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' (प्रेरितों 2:42); (प्रेरितों 20:7)

''यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।'' (मत्ती 28:18-20)

दान के विषय में : आमदनी के अनुसार दिया जाए। (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)

''हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव

से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।'' (2 कुरिन्थियों 9:7)

आत्मिक गीत गाना - परमेश्वर की स्तुति करना।

''और आपस में भजन और स्तुति गान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।'' (इफिसियों 5:19)

''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओं और अपने अपने मन में, अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गति गाओ।'' (कुलुस्सियों 3:16)

प्रभु भोज - हर हफ्ते के पहले दिन

नये नियम के अनुसार जो अराधना का सच्चा उदाहरण दर्शाया गया है उन्हीं निर्देशों का हम पालन करेंगे।

मनुष्य का प्रेम परमेश्वर के प्रति होने के कारण जो विश्वास और निष्ठा उसके मन में है उसके नाते वह निश्चित तौर से पूरी वफादारी और सामर्थ से परमेश्वर की अराधना करेगा जिस परमेश्वर ने स्वयं पहले होकर मनुष्य से प्रेम किया।

''हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया।'' (1 यूहन्ना 4:19)

मसीही चाल-चलनः बाइबल यह शिक्षा देती है :

कि मुझे इस बात की चिंता होनी चाहिए कि मेरा चाल-चलन मसीह यीशु के प्रति कैसा है?

''तुम पृथ्वी के नमक हो, परन्तु नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

तुम जगत की ज्योति हो, जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।

और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवार पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है।

इसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।'' (मत्ती 5:13-16)

''धोखा न खाना बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।'' (1 कुरिन्थियों 15:33)

परमेश्वर की संतान होने के नाते, हम इन पदों से यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि हमें हर उस बात की चिंता होनी चाहिए जो हम करते हैं या करने से मना कर देते हैं क्योंकि निश्चित रूप में इसका सीधा प्रभाव मसीह यीशु पर पड़ता है।

मसीह यीशु द्वारा दिये गये वचनों पर यदि हम चलेंगे तब लोग उनको हमारे चरित्र में, जीवन में देखेंगे और तब ही वे मसीह यीशु को ग्रहण करेंगे।

परमेश्वर की संतान जगत की ज्योति है और पृथ्वी का नमक है। एक ऐसे संसार में जो दुष्टता और अंधकार में पड़ा है।

''हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से है, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।'' (1 यूहन्ना 5:19)

हमें एक ऐसी ज्योति बनना है जो संसार में चमके और एक ऐसा नमक जो स्वाद दें। मसीह यीशु हमें निजी तौर पर उत्तरदायी ठहराते हैं कि हम जगत की ज्योति हो और पृथ्वी का नमक हो। इसका परिणाम वह हमारे जीवन की उन बातों से देखते हैं जो हम कहते हैं और करते हैं या उनके कहने और करने से अपने आपको रोकते हैं।

वचन का अध्ययन

बाइबल यह शिक्षा देती है कि मुझे लगातार परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते रहना चाहिए।

''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)

''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित न होने पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।'' (2 तिथुथियुस 2:15)

हमने देखा कि विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है, इसलिये यह उचित और वचनानुसार होगा कि हम विश्वास में बढ़ते जायें, लगातार वचन के अध्ययन के करते रहने से।

जब हम वचन का अध्ययन करेंगे तो हम परमेश्वर की इच्छा को भली भांति जानेंगे और परमेश्वर की सेवा का कार्य अच्छी तरह कर पाएंगे।

बाइबल बताती है कि विरिया के लोग थिसलुकी के लोगों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण, किया और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि यह बातें यों ही है कि नहीं। (प्रेरितों 17:11)

''नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक युद्ध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।'' (1 पतरस 2:2)

''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है अर्थात वह वचन जो मैंने कहा है।'' (यूहन्ना 12:48)

हमें परमेश्वर की संतान होने वाले अपना जीवन की विचारधारा ऐसी जाननी चाहिए कि प्रतिदिन हम परमेश्वर के वचन को पढ़ेंगे और अध्ययन करके अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

दूसरों के लिये चिंता करना बाइबल यह शिक्षा देती है कि मेरी चिंता उन लोगों के विषय में होनी चाहिये जो खोऐ हुए हैं।

''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोऐ हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' (लूका 19:10)

''और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु

जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:15, 16)

''जो तित्तर बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।'' (प्रेरितों 8:4)

''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।'' (यूहन्ना 15:8)

हमें इस बात का निरंतर ध्यान रखना चाहिये कि हर एक मनुष्य बगैर मसीह यीशु के खोया हुआ है। यीशु इसीलिये आया कि खोएु हुओं को ढूढ़े और उनका उद्धार करे।

ऐसे लोग स्वार्थी और पाप पूर्ण है जिन्होंने सच्चाई को जान लिया परन्तु इस सुसमाचार को दूसरों के साथ नहीं बांटा।

''तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उनकी प्रतीति की थी, कहा यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।'' (यूहन्ना 8:31, 32)

यह बिलकुल ऐसा है कि किसी को कोई भयंकर, भयभीत करने वाली बीमारी है और आप उसका उपचार भी जानते हैं पर उसको बता नहीं रहे। संसार में लोग पाप के कारण खोए हुए हैं; परन्तु परमेश्वर का प्रेम यह निर्णय लेने के लिये प्रेरित करता है कि हम ऐसे लोगों के साथ संबंध स्थापित करें और उन्हें परमेश्वर के उद्धार की योजना से अवगत करवायें।

यीशु का जीवन, मरना, गाड़ा जाना और फिर से जी उठना इसीलिये होने दिया गया ताकि मनुष्य उद्धार पा सके। आपकी आत्मा इतनी बहुमूल्य है कि मसीह ने स्वयं इसका दाम चुकाया ताकि आपके ऊपर पाप के कारण जो दण्ड की आज्ञा थी उससे बच सके।

''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

''क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ।

पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहले ही से जाना गया था, पर अब इस अंतिम युग में तुम्हारे लिये प्रकट हुआ।'' (1 पतरस 1:18-20)।

''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। सो जब कि हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? (रोमियों 5:8, 9)

निसन्देह अब आपको चाहिये कि इस सुसमाचार का भरपूर आनन्द दूसरे भी ले सकें, वह भी उद्धार प्राप्त करें।

अब एक आत्मा को बचाना आपकी जवाबदेही है। प्रत्येक मसीही को दूसरी खोई हुई आत्माओं को बचाना है।

''उसने और बहुत बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ।'' (प्रेरितों 2:40)

आपने यीशु मसीह की आज्ञा को माना है और यह अपेक्षा की जाती है कि अब पूरे विश्वास से इस प्रयत्न में है कि आपके जीवन से परमेश्वर की महिमा हो।

''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।'' (इब्रानियों 5:8, 9)

''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।'' (2 कुरिन्थियों 5:7)

''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।'' (यूहन्ना 15:8)

इस संदेश में परमेश्वर के वचन की बातें लिखी गई हैं जिससे आप अपने जीवन में मसीह की सेवा के लिये एक अनुभव प्राप्त करें। कृपया परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें उसमें सत्य को खोजें और यीशु मसीह को अपना जीवन समर्पित करें ताकि दूसरे आपके जीवन से प्रेरित होकर पिता की जो स्वर्ग में है महिमा करें। एक मसीही की रोज की जीवन शैली का आनन्द यही है।

अनुवादित : फैरल भाई

शीशी में आंसू

(मत्ती 5:4)

डेविड रोपर

"...क्योंकि वे शांति पाएंगे" स्पष्ट विरोधाभास

शांति की आशीष पर ध्यान देने से पहले कुछ समय के लिए धन्य वचन पर स्पष्ट विरोधाभास की बात करते हैं, "धन्य (प्रसन्न) हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पाएंगे।" पहली बार सुनने पर यह अजीब-सा लगता है पर प्रसन्नता का कोई भी फार्मूला इस तथ्य के ध्यान में रखना आवश्यक है कि अप्रसन्न समय आएंगे। जीवन हमें हरी-हरी चराइयों में सदा नहीं ले जाता; कई बार हमें तराइयों और छाया का भी सामना करना पड़ता है। प्रसन्नता की कोई भी चर्चा जो इस सत्य को पहचानने में नाकाम रहती है अवास्तविक है और इस कारण उसका कोई महत्व नहीं।

आत्मिक शोक करने और प्रसन्नता में क्या संबंध हो सकता है? कुछ प्रारंभिक सुझाव इस प्रकार हैं: (1) व्यवहार अपने आप में प्रसन्नता में योगदान दे सकता है। धन्य वचनों की प्रगतिशील प्रगति पर विचार करें। जब हम अपने आत्मिक खालीपन को समझ पाते है (पहला धन्य वचन) तो अपनी आत्मिक आवश्यकताओं पर शोकित होना स्वभाविक होता (दूसरा धन्य वचन)। पहला धन्य वचन इस तथ्य को रेखांकित

करता है कि हमें अपने ऊपर नहीं बल्कि परमेश्वर पर निर्भर रहना आवश्यक है, जबकि दूसरा धन्य वचन पहला कदम है। पापों पर शोक करना पश्चात्तापी मन उत्पन्न करता है जो आज्ञापालन और क्षमा पाने की ओर ले जाता है। 2 कुरिन्थियों 7:10 को फिर से देखें, "क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है" (आयत 10क)। जितना ही हम प्रभु के निकट होंगे उतना ही हमें प्रसन्न होना चाहिए।

(2) याद रखें कि आत्मिक शोक करने के लिए आपको मूल्यों की सही समझ होना आवश्यक है। यदि हमारी प्राथमिकताएं सही है, तो हम उन बातों पर जो वास्तव में अनावश्यक है अप्रसन्न या नाखुश नहीं होंगे। (3) याद रखें कि धन्य वचन में जोर इस बात पर है कि सच्ची और सदा तक रहने वाली खुशी धन्य वचन की प्रतिज्ञा से मिलती है यानी हम शोक करने पर भी प्रसन्न हो सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमसे शांति का वायदा किया है।

बाइबल बताती है कि हमारा परमेश्वर शांति देने वाला परमेश्वर है, " क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे? या हमें कितनों की नाई सिफारिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुम से लेनी है? हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं" (2 कुरिनीयों 1:3, 4क)। यशायाह में हम पढ़ते हैं कि मसीहा दूसरों को शांति देने वालों में से एक होना था:

> ....यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए
> मेरा अभिषेक किया है
> और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शांति दूं...;
> और सियोन के विलाप करने वालों के
> सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बांध लूं,
> कि उनका विलाप करके हर्ष का तेल लगाऊं (यशायाह 61:1-3; लेखें लूका 4:16-21)।

भजन संहिता 56:8 में हमें एक अजीब वाक्यांश मिलता है, जिससे हमारे पाठ का शीर्षक लिखने में प्रेरणा मिली। दाऊद ने परमेश्वर से कहा: "तू मेरे मारे मारे फिरने का हिसाब रखता है, तू मेरे आंसुओं को अपनी कुप्पी में रखता है।" कुप्पियां या शीशियां या फ्लास्क दाऊद के समय में आम नहीं होते थे। वे कीमती होती थी जिस कारण उनमें केवल बहुमूल्य चीजें जैसे कीमती इत्र, कीमती दाखरस या बहुत नाजुक लेप के लिए ही रखे जाते थे। दाऊद परमेश्वर से अपने आंसुओं को इतने महत्वपूर्ण मानने के लिए कह रहा था कि उन्हें उसकी शीशी में रख लिया जाए, जिससे वे कभी भूले नहीं। मैंने सुना है कि कैसर यानी सीजर कई बार अपने आंसुओं को इकट्ठा करके उन्हें शीशी में रख लेते थे। वे शीशियां लेबल लगाकर प्रदर्शनी के लिए रखी जाती थी। वे उन दुखद घटनाओं के संबंध में जो रोमी नागरिकों को प्रभावित करती थी कैसरों की सहानुभूति की गवाह होती थी। आप और मैं सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर के लिए हमारे आंसू कीमती हैं और यह कि उनहें बूंद-बूंद

करके उसके स्मरण की "शीशी" में जमा किया जाता हैं वह उन्हें भूलेगा नहीं उसे हमारा ध्यान है। वह हमें शांति देगा।

शांति की प्रतिज्ञा

यह हमें इस सवाल पर ले आता है कि "वह शांति क्या है जिसकी प्रतिज्ञा की गई है?" "शांति पाएंगे" "अपनी ओर बुलाना" (पास) के साथ (बुलाना)। इसका अर्थ समझाना, ताड़ना करना या प्रोत्साहित करना हो सकता है (देखें लूका 3:18; 1 कुरिन्थियों 1:10; इब्रानियों 10:25)। हमारे वचन पाठ में इसका अर्थ "प्रभु का हमें शांति देने हमारी ओर आना" है। हमश्रृंखला के आरंभ पाठ में मैंने सुझाव दिया था कि धन्य वचनों का आंशिक रूप में पूरा होना, और भविष्य में स्वर्ग में पूर्ण रूप में पूरा होना है। मेरा मानना है कि शोक करने वाले के लिए शांति की यीशु की प्रतिज्ञा सच्ची है।

इस जीवन में शांति के संबंध में, आत्मिक शोक करने वाले को कम से कम दो जगह से शांति मिली है। पहले तो शांति परमेश्वर के वचन में मिलने वाली प्रतिज्ञाओं से मिलती है। उदाहरण के लिए मैंने पहले ही बताया कि अपनी आत्मिक स्थिति पर शोक करना व्यक्ति के मन फिराने का कारण बनेगा, जिसका परिणाम प्रभु का आज्ञापालन होगा, जिससे उस व्यक्ति के पिछले पाप क्षमा हो जाएंगे। पतरस ने गैर मसीही लोगों से कहा था "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:38)। मसीही लोगों के लिए यहून्ना ने लिखा है कि "यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम ज्योति में चलें, तो एक-दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यहून्ना 1:7)। यह जानना बड़ी शांति देने वाला है कि हमारे सब पाप क्षमा हो चुके है। कूश देश का मंत्री बपतिस्मा लेने के बाद (प्रेरितों 8:26-39) "आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया" (आयत 39)।

इसके अलावा मैंने सुझाव दिया कि मत्ती 5:4 वाले शोक में पाप और इसके परिणामों पर सामान्य रूप में शोक करना शामिल है। ऐसा शोक करना हमें कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। ऐसा होने पर हमें वचन से फिर शांति पाने वाला आश्वासन मिलता है। भजन संहिता 126 में हम पढ़ते हैं, "आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जय जयकार करते हुए लवने पाएंगे। चाहे बोने वाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियां लिए जय-जयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा" (आयतें 5, 6)। यह वचन लेखक के भरोसे की बात करता है कि परमेश्वर उन्हें इस्राएल देश में बसने की आशीश देगा, पर हमें यह उनका स्मरण दिलाता है जो आज वचन के बीज बोते हैं। मुझे आत्माओं को जीतने वाले उन विश्वासियों, विवेकी माता-पिता बाइबल क्लास में पड़ाने वालों, कलीसिया के अगुओं और अन्यों का स्मरण आता है जो सिखाते है। वे इस बात को समझाते हैं कि उनके लिए जिन्हें वे सिखाने की कोशिश कर रहे हैं आंसुओं से बीज को पानी देने का क्या अर्थ है। यदि

आप इन में से एक है और अपने काम के प्रति ईमानदार रहते है, तो जान लें कि अंत में परमेश्वर फसल को बढ़ाएगा (1 कुन्थियों 3:6)। आप "आनन्द के साथ चिल्लाते हुए पुकारेंगे" आप अपने साथ फसल को कटाते हुए, "आनन्द की पुकार से आएंगे।"

इस जीवन में शांति के संबंध में, आत्मिक शोक करने वाले के लिए सामर्थ का एक और स्रोत परमेश्वर की उपाय करने वाली परवाह और रक्षा है। पौलुस ने लिखा, "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए है" (रोमियों 8:28)। इब्रानियों 13 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोडूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा" (आयत 5)। यीशु ने कहा, "देखो मैं जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:20)।

(2) आने वाले जीवन में शांति! फिर मैं यह जोर देना चाहता हूं कि शांति की प्रतिज्ञा पूर्ण और अंतिम रूप में पूरी अगले जीवन में ही होगी। बहुत पहले दाऊद ने लिखा था, "कदाचित रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनन्द पहुंचेगा" (भजन 30:5)। "आनन्द" पर यह टिप्पणी है, "इब्रा (नी) गाना" रोना पक्का आगंतुक नहीं है; यह केवल रात के लिए है, फिर चला जाएगा और उसके बाद गाना इसकी जगह ले लेगा। इस जीवन में रोने के बाद आनन्द, फिर रोना, फिर गाना और यह सिलसिला चलता ही रहेगा। केवल स्वर्ग में ही वह पक्का आनन्द हमारे मनों में मिलेगा।

लूका 16 में हमें धनवान और लाजर की कहानी मिलती है। लाजर को इस जीवन में चैन नहीं था (आयतें 20, 21, 25); परन्तु जब वह मर गया तो उसे स्वर्गदूतों ने अब्राहम की गोद में पहुंचा दिया (आयत 22)। अब्राहम तब उसके बारे में कह पाया, "अब वह यहां शांति पा रहा है" (आयत 25)। स्वर्ग में परमेश्वर" ...सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी;.... (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

क्या भविष्य में पहिचान रहेगी?

पैरी बी. कॉथम

क्या लोग स्वर्ग में एक-दूसरे को पहिचान सकेंगे? यद्यपि इस विषय में बाइबल स्पष्टता से तो कुछ नहीं बताती, तौभी कई स्थानों पर से पढ़कर ऐसा लगता है कि यह कदाचित सच हो सकता है। प्रभु यीशु के कथनानुसार, स्वर्ग में मनुष्यों के बीच पृथ्वी जैसे संबंध नहीं होंगे (मत्ती 22:30; मरकुस 12:25)। दूसरी ओर, यीशु ने यह शिक्षा दी थी की स्मरण करने की शक्ति तथा व्यक्तिगत पहिचान, अर्थात पहिचानने की विशेषताएं, भविष्य में विद्यमान रहेंगी। (मत्ती 25:34-46; प्रकाशित 6:9, 10)। धनवान मनुष्य ने अधोलोक में लाज़र को पहिचानकर उससे दया की भीख मांगी थी। (लूका 16:23, 24)। जब पतरस मसीह के साथ उस पहाड़ पर था जहाँ यीशु का

रूपान्तर हुआ था तो, किसी प्रकार, उसने मूसा तथा एलिय्याह को पहिचान लिया था। (मत्ती 17:3, 4)।

स्वर्ग में एकत्रित होकर एक साथ रहने के विषय में जब यीशु ने एक जगह कहा था, तो वहाँ भी व्यक्तिगत पहिचान का संकेत मिलता है। यीशु ने कहा था, ''और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे पूरब और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।'' (मत्ती 8:11)। क्या इब्राहीम और इसहाक और याकूब को पहिचाना जा सकेगा? यदि उनकी पहिचान होगी तो अन्य सभी लोगों की भी पहिचान हो सकती है! स्वर्ग परमेश्वर का परिवार होगा, जिस में सभी पीढ़ियों के लोग अपने पिता के घर में रहेंगे। वहाँ ''वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।'' (प्रकाशित. 21:4)। वहाँ धर्मी आत्माएं अपनी जिलाई गई अविनाश देहों के साथ होंगी। प्रेत आत्माओं के समान नहीं। (1 कुरिन्थियों 15:42-54)।

जबकि दाऊद के मरे हुए पुत्र को गाड़ा भी नहीं गया था, उसने कहा था, ''मैं तो उसके पास जाऊंगा, परन्तु वह मेरे पास लौट न आएगा।'' (2 शमूएल 12:23)। इसका अर्थ वास्तव में यह है, ''मैं वहाँ जाकर उसके पास रहूंगा।'' क्या यहाँ ऐसा प्रतीत नहीं होता कि दाऊद को वहाँ अपने पुत्र को पहिचानने की आशा थी? अपने पुत्र के पास जाकर रहने के विचार से दाऊद को क्या शांति मिलती, यदि मृत्यु के उस पार वह उस बालक को पहिचान भी न पाता? पौलुस ने एक जगह कहा था, कि स्वर्ग में उसे यह जानकर बड़ा ही आनन्द मिलेगा कि जिन्हें वह पृथ्वी पर मसीह के पास लाया था वे मसीह के प्रति विश्वासी बने रहे और उद्धार पाए हुए लोगों की मंडली के बीच में हैं। (फिलिप्पियों 2:16; 4:1; 1 थिस्सलुनिकियों 2:19, 20; 2 कुरिन्थियों 1:14; 4:14)। प्रत्यक्ष ही है, कि पौलुस जानता था कि वहाँ स्मरण शक्ति नहीं मिटेगी। उसे इस बात की प्रतीक्षा थी कि उसे वहाँ फिर से उन्हीं लोगों के साथ सहभागिता प्राप्त होगी जिनके साथ वह पृथ्वी पर था। ऐसे ही पतमुस नामक टापू में यूहन्ना द्वारा यीशु को पहिचानना भी इस बात की ओर संकेत करता है कि स्वर्ग में लोग कदाचित एक दूसरे को पहिचान सकेंगे। (प्रकाशित. 1:13)।

पृथ्वी पर रहते हुए मनुष्य का ज्ञान, स्वर्ग तथा आनेवाले जीवन के विषय में, निश्चित ही सीमित है। मृत्यु पश्चात मिलनेवाले आनन्द के विषय में भी उसके पास केवल कुछ संकेत ही हैं। यूहन्ना ने, जो कि एक प्रेरित था, इस विचार को इन शब्दों में व्यक्त किया था, ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं, और अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।'' (1 यूहन्ना 3:2; देखिए, व्यवस्थाविवरण 29:29)।

वे लोग जो मसीही हैं, वे जानते हैं, कि उन लोगों के लिये एक-दूसरे से अलग होना कुछ ही समय की बात है। वे एक दूसरे के साथ फिर इकट्ठे होंगे, और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हमेशा रहेंगे। मसीही लोगों के पास मृत्यु के बाद, जीवन की और आनेवाले जगत में सब पवित्र लोगों के साथ सहभागिता पाने की यह कितनी धन्य

और महान आशा है! इसलिये लिखा है, ''सो इन बातों से एक-दूसरे को शांति दिया करो।'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)।

यीशु जिस प्रकार का व्यक्ति था

लैरी वैस्ट

यीशु दिखने में कैसा था? यह जानना हमारे लिए इतने मायने नहीं रखता। परन्तु आवश्यक बात यह है कि क्या वह अभी मेरी सहायता कर सकता है? क्या मेरी परेशानी में वह मेरी सहायता कर सकता है? यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में हम पढ़ते हैं कि वह कैसा दिखता था। परन्तु यीशु के विषय में लेखकों ने यह नहीं लिखा कि वह कैसा दिखता था। कैसा दिखाई देता था, कैसे कपड़े पहनता था, उसका कद तथा उसका शरीर कैसा था और उसके बोलने का लहजा कैसा था। मैं इस बात को अच्छी तरह से जानता हूं कि यीशु की सामर्थ इस बात में नहीं थी कि वह दिखने में कैसा लगता था, परन्तु उसके स्वभाव की गहराई के द्वारा मैं उसे पहचान सकता हूं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु अन्य लोगों से कोई भिन्न नहीं लगता होगा। परन्तु फिर भीवह एक विशेष व्यक्ति था। क्योंकि अन्दरूनी रूप में उसमें बहुत विशेषताएं भरी हुई थी। बाइबल के अनुसार सब कुछ होते हुए भी वह एक दास बना और एक ऐसा दास जिसने दूसरों की सेवा की। परमेश्वर का वचन बताता है कि वह ''सेवा करवाने नहीं बल्कि सेवा करने आया'' था। जो लोग उसे जानते थे, और जो उसके परिचित थे, जिन्होंने उसे सुना था, वे सब यह जानते थे कि वह उनकी सेवा कर रहा है। वह उनकी सेवा करता था। उसे लोगों की चिंता थी। जो धनी लोग थे, वे उसकी नुकताचीनी करते थे क्योंकि वह निर्धनों तथा दलितों के साथ रहता था।

वह चुंगी लेने वालों के साथ, जिन्हें नीच समझा जाता था, खाना खाता था। सामरी लोग, जिन्हें नीच जाति का समझा जाता था, वह उनके साथ बैठता था तथा उनके घर में जाता था, यहूदी लोग इस बात को पसंद नहीं करते थे। एक बुरी स्त्री ने उसे भेंट लाकर दी और यह बात खुद को धार्मिक समझने वाले यहूदियों को पसंद नहीं आई। यीशु ने उस पापिन, बदनाम स्त्री से कहा, ''तेरे पाप क्षमा हुए।'' यीशु के दो रूप नहीं थे, अर्थात वह कभी भी दिखावा नहीं करता था। जो वह था, वो था। फरीसी लोगों में जो उस समय के लम्बे-लम्बे चोगे पहनने वाले लीडर थे, उन्होंने जब देखा कि यीशु को इस बदनाम स्त्री के विशय में सब कुछ पता है और फिर भी वह उससे बात कर रहा है, तो उन्हें बहुत बुरा लगा। यीशु उन लोगों के मन की बात जानता था और वह यह भी जानता था कि इन लोगों के मन बुरे हैं। उसने कभी भी यह नहीं चाहा कि पापियों से घृणा करे। वह इन धार्मिक गुरुओं के ढकोसलों को जानता था कि वे बाहर से कुछ और, और अन्दर से कुछ और है। यीशु को उन लोगों की चिंता थी और वह उनसे प्रेम करता था। उसने एक बात कही थी कि

''छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो।'' वह बच्चों से बहुत प्रेम करता था। वह लोगों से मिलता था तथा उनके दुख दर्द की उसे चिंता थी। वह उनकी समस्याओं को सुनता था। वह सेवा करने आया था, अपनी सेवा करवाने के लिए नहीं।

शायद आपकी भी अपनी कुछ समस्याएं होंगी। तब आप केवल यह मत सोचें कि आप अकेले हैं। यीशु की तरह ही आप भी दूसरों को अच्छा समझें और यह जानें कि यीशु ने दूसरों की सेवा की। यदि आप किसी की सहायता कर सकते हैं तो करें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप दिखने में कैसे लगते हैं। आपका रंग कैसा है। आपकी आवाज कैसी है, बात यह है कि क्या आप लोगों को वैसे समझते हैं जैसे यीशु लोगों को समझता था। यीशु के साथ चलकर आप एक अच्छे और नेक इंसान बन सकते हैं। यीशु आपका उद्धार करना चाहता है। आज ही उसमें विश्वास करके बपतिस्मा लें।

दूसरों की सहायता करना

डेविड स्टिवर्ट

भेडों और बकरियों के दृष्टांत में यीशु ने मसीह की देह के भीतर (''मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों'') दूसरों की सहायता करने पर जोर दिया। यरूशलेम में आरंभिक मसीही लोगों में ऐसा परोपकार पाया जाना आम बात थी। उनकी अत्यधिक उदारता के कारण ही **''उनमें कोई भी दरिद्र न था'' (प्रेरितों 4:34)। बेशक प्राथमिकता मसीही भाई-बहनों को दी जानी आवश्यक है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इससे जो लोग मसीह के बाहर है उनकी सहायता करने की हमारी जिम्मेदारी खत्म हो जाती है। पौलुस ने लिखा है, ''इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेषकर विश्वासी भाइयों के साथ''** (गलातियों 6:10)। गैर मसीही लोगों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने से हो सकता है कि आत्मिकता में उनकी सहायता के लिए द्वार खुल जाएं।

आपको कौन-सा मुकुट मिलेगा?

डा. एफ. आर. साहू (छ.ग.)

''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं वरन उन सबको भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं'' (2 तीमु. 4:7-8)''

प्रेरित पौलुस, मसीह में अपनी दौड़ को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ पूरी

करने के द्वारा यह आशा और यही विश्वास के साथ कहता है कि ''उन सबको भी यह मुकुट मिलेगा, जो प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।''

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या आप, उम्मीद करते हैं कि आपको भी मुकुट मिलेगा? परन्तु कौन सा मुकुट मिलेगा?

आईये हम देखें कि जो मसीह में हैं किसको कौन सा मुकुट मिलेगा?

पवित्र शास्त्र हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि ''उद्धार'' हमारे कार्मे से नहीं परन्तु परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा अनुग्रह ही से प्राप्त होता है जैसे लिखा है-''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ और यह (उद्धार) तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है। और न (हमारे भले) कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें।'' (इफि. 2:8-9)।

रोमि.-6-23 हमें बताता है कि पाप के प्रति कठोर दण्ड ''मृत्यु'' की घोषणा तो हो चुकी थी पर अब हर एक मनुष्यों के लिये जो मसीह यीशु पर विश्वास लाकर सुसमाचार की आज्ञा मानने वालों के लिये उद्धार यानि अनन्त जीवन परमेश्वर की और से बरदान है।

पवित्र शास्त्र हमें यह भी बताता है कि मसीह में बहुत-सी स्वर्गीय अशीषें और दान-वरदानों के साथ-साथ तमाम विश्वासियों के लिये जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर हृदय से विश्वास करके उद्धार प्राप्त किया है, उनके लिये कुछ महत्वपूर्ण मुकुट भी रखें है।

और जो-जो व्यक्ति उद्धार प्राप्त करने के पश्चात इस सांर में रहते हुए प्रभु यीशु में सच्चा प्रेम रखेंगे और ईमानदारी और नि:स्वार्थ रूप से अपनी-अपनी योग्यतानुसार सेवा कार्य करेंगे, प्रभु यीशु उन्हें स्वयं मुकुट प्रदान करेगा।

कौन-कौन सा मुकुट? (1) आनन्द और बढ़ाई का मुकुट (2) धार्मिकता का मुकुट (3) जीवन का मुकुट (4) महिमा का मुकुट

अब प्रश्न यह उठता है कि इन मुकुटों में से कौनसा मुकुट है जिसके आप भागी बन सकते है परमेश्वर के बचन में लिखा है कि जब हम सब जो बचें रहेंगे मध्य आकाश में प्रभु के पास उठा लिये जाएंगे। और हम सब महिमायुक्त देह पाकर बदल जाएंगे तो वहमुकुट जो भिन्न प्रकार का होगा योग्यता अनुसार मिलेगा।

आनन्द और बड़ाई का मुकुट जैसे लिखा है- 'भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम न होंगे।'' (1 थिस्स 2:19)।

यहां प्रेरित पौलुस थिस्सलुनिकियों के विश्वासियों को सम्बोधित करते हुए कह रहा था कि मैंने तुम्हें प्रभु यीशु का शुभ समाचार सुनाने के लिये और आत्मिक उन्नति के लिये जो भी अथक परिश्रम किया है, इसका प्रतिफल स्वयं प्रभु यीशु मुझे देगा और वह आनन्द बड़ाई का मुकुट यह होगा कि तुम और मैं हम सब वहां प्रभु के सम्मुख उपस्थित रहेंगे। और प्रभु यीशु के सिंहासन के सम्मुख तुम्हारी उपस्थिति यह मेरे लिये आनन्द और बढ़ाई का मुकुट होगा।

धार्मिकता का मुकुट जैसे लिखा है- ''भविष्य में मेरे लिये धर्म का मुकुट रखा

हुआ है, जिसे प्रभु जो, धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं वरन उन सबको भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते है।'' (2 तीमु. 4:8)।

हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस जो शाऊल के नाम से जाना जाता था वह यीशु के चेलों को सताता और धमकाता और कलीसिया पर अत्याचार करता था। पर एक दिन प्रभु यीशु का दर्शन पाया और उस दिन से उसका जीवन बदल गया और वह प्रभु यीशु का एक सच्चा दास और प्रेरित बन गया और उसने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रभु की सेवा में लगी दिया तथा उसके कार्य को सच्ची निष्ठा ईमानदारी से करता रहा।

प्रभु की सेवा करते समय उसे भयंकर कष्ट यातनाएं और कई प्रकार के उपद्रव को सहना पड़ा फिर भी उसने प्रभु के अनुग्रह से अपनी दौड़ को पूरा किया जैसे कि उसने कहा-मैं अच्छी कुस्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है।'' (2 तीमु. 4-7)।

पौलुस अपने जीवन के आखिरी पड़ाव पर जब वह बूढ़ा हो चुका था और वह जानता था कि उसके अब चूक करने का समय बिलकुल निकट है। फिर भी कितनी दृणता और निश्चयता के साथ कह रहा था ''कि मेरे लिये धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है और प्रभु जो धर्मी और न्यायी है उन्हें वह स्वयं मुकुट देगा।''

अब देखना यह है कि क्या आप अच्छी कुस्ती लड़ चुके हैं और अपनी दौड़ पूरी कर रहें हैं? क्या आप और हम प्रभु की नि:स्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं? जैसे हमने पढ़ा'' प्रभु धर्मी है और धर्म का मुकुट रखा हुआ है और वो मुकुट धर्मी जन को मिलेगा। इसलिये हम प्रयास करें उस धार्मिकता के मुकुट को पाने के लिये।

जीवन का मुकुट: याकूब अपनी पत्री के अध्याय -1:12 यूं लिखता है ''धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में ख़रा निकल कर जीवन का मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम रखने वालों से की है।'' अर्थात मसीहीयों के जीवन में अनेकों प्रकार के दु:ख क्लेश और परीक्षाएं तो आएंगे ही पर जो कोई ''अंत तक प्रभु में विश्वासी बना रहेगा, वह जीवन का मुकुट पाएगा।'' (प्र.वा.-2:10)।

कृपया इस बात पर ध्यान दें कि हर एक व्यक्ति जो यीशु पर यह विश्वास करके कि यीशु जीविते परमेश्वर का पुत्र है और वह अपने तमाम पापों से पश्चाताप के साथ उसे अपने हृदय में स्वीकार करता है तो उसके पास अनन्त जीवन है, और वह प्रभु के साथ में अनन्त काल तक रहेगा। (यूहन्ना 3:36/5:24/ 1 यूहन्ना 5:11-12)।

परन्तु जिन मसीहीयों को जीवन का मुकुट प्राप्त होगा उनमें स्वर्ग का आनन्द उठाने का एक अलग ही क्षमता होगी और वह व्यक्ति पूरी भरपूरी के साथ स्वर्ग का आनन्द उठाता रहेगा। क्योंकि उसने उद्धार प्राप्त करने के पश्चात इस पृथ्वी पर रहते हुए प्रभु के अनुग्रह से सब प्रकार की परीक्षाओं में स्थिर रह कर विशेष रूप से प्रभु को महिमा दी है।

महिमा का मुकुट: जैसे लिखा है ''और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुर्झाने का नहीं।'' (1 पत-5:4)।

यह मुकुट उन व्यक्तियों को मिलेगा जो स्थानीय कलीसिया में रह कर उसकी रखवाली करते हैं? और कलीसिया के रखवाले को हम प्राचीन या एल्डर या अध्यक्ष

भी कह सकते हैं। और हर एक स्थानीय कलीसिया में ऐसे व्यक्ति नियुक्त होते हैं जो परमेश्वर के वचनों की शिक्षा को खराई के साथ देते हैं। विशेष कर एल्डरों का कार्य बचनों की झूठी शिक्षा देने वाले शिक्षकों और झूठे मसीहीयों से कलीसिया को बचाना होता है। और यह उसके लिये तभी संभव होता है, जब उनमें आत्माओं की परख और स्वयं में आत्मिक संयम विद्यमान होता है।

विशेष कर इनका सेवा कार्य हमेशा बहुत ही जोखिम से भरा तो रहता है परन्तु ऐसे रखवाले अगुए या एल्डर जो प्रभु के पवित्र भय में और प्रेम से प्रेरित हो कर ईमानदारी और सच्चाई से अपना कार्य करते हैं उन्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा?

पतरस ने कलीसिया के तमाम प्रचीनों और एल्डरों को समझाते हुए अपने संदेश में यही लिखा था कि – ''तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होने वाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं, कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से और नीच-कमाई के लिये नहीं पर मन लगाकर। जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो। जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुर्झाने का नहीं'' (1 पत.-5:1-4)।

प्रियो, अलग-अलग प्रकार के ये चारों मुकुट कभी मुर्झाने वाले नहीं वरन अनन्तकाल तक महिमा का कारण ठहरने वाले हैं।

इन मुकुटों को पाने के लिये हमारा प्रयास कैसा होना चाहिए?

जैसे हर एक पहलवान या दौड़ने वाला व्यक्ति इस पृथ्वी पर के मुर्झाने वाले अर्थात नाशवान मुकुट को पाने के लिये कितना कठिन परिश्रम और सयम के साथ प्रयास करता रहता है। क्या हमें भी अपने प्रभु यीशु के प्रेम के कारण सच्चे मन से और हर एक प्रकार के असयम का त्याग करते हुए आन्नद से उसकी सेवा कार्य को नहीं करना चाहिए? जिससे उस दिन जब हम प्रभु के सामने उपस्थित होंगे तो वह मुकुट को प्राप्त करेंगे जो मुर्झाने का नहीं।

हम अपने उद्धार की चिंता करते हुए और बिना कुड़कुड़ाए जैसा जिसको कार्य मिलता है उसे निस्वार्थ और ईमानदारी से करने का प्रयास करें। अपने अन्दर आनंद, सेवा भावना जगायें। आज हर एक मनुष्य के लिये सबसे ज्यादा जरूरी उसका उद्धार और पापों की क्षमा और परमेश्वर ने इस महत्वपूर्ण बात को अपने पुत्र यीशु के रूप में बलिदान के लिये दे दिया है?

अत: जो उस पर विश्वास करके अपने अपराधों की क्षमा के लिये, मसीह यीशु के नाम से बपतिस्मा ले तो, उद्धार अनन्त जीवन जैसी आशीषों को प्रापत करेगा तथा जीवन के मुकुट को भी प्राप्त करेगा जो कभी मुर्झाने का नहीं।

क्या आप जीवन का मुकुट प्राप्त करना चाहते हैं, यदि हां तो यीशु में विश्वास करके बपतिस्मा लें। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38 तथा प्रेरितों 2:38 तथा प्रेरितों 22:16) और आप मृत्यु तक विश्वास योग्य बनें रहेंगे तो जीवन का मुकुट आपका होगा।

दिल से शुक्र करूं

बेनु अरनेस्ट

तेरे प्यार को, ऐ मेरे प्रभु,
बता मैं, कैसे बयान करूं,
दलदल में था पड़ा हुआ
चट्टान पर तूने खड़ा किया
मुझ पर ऐसी दया हुई कि
मैं दिल से शुक्र करूं।

तू ने मुझको जीना सिखाया
हर पल दिया मुझे सहारा,
निकाल कर अंधेरों में से दे दिया रस्ता नया
तेरा मिला सहारा तो मुझे चैन मिला
तेरी ऐसी दया हुई कि
मैं दिल से शुक्र करूं।

कैसा अजब है प्यार तेरा
कि दे दिया जीवन का दान मुझे
मेरी खातिर मौत भी सह ली
तो मौत को मात मिली
तेरी ऐसी दया हुई कि
मैं दिल से शुक्र करूं।

दुआ है अब तो मेरी दिन रात यही
जाने वो भी जीते जी जो हैं तेरे बिना
इतर के जैसी तेरी यह खुशबू
महका दे जीवन उनके भी
तेरे हर उपकार के बदले
मैं दिल से शुक्र करूं।।